श्रम विभाग

भ्रादेश

दिनांक 7 दिसम्बर, 1983

सं. श्रो.वि./करनाल/36-83/63821.—चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि कार्यकारी श्रक्षियन्ता रटेट म ईनर ईरीगेशन ट्यूबर्बल कारपोरेशन ट्यूबबल डिब्लिन,नं०1, म ल रोड़, करनाल, के श्री.क श्री करण सिंह तथा एर के प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के रणक्ष में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं:

इसलिए, ब्रब, ब्रीखोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा राज्य सरकार हारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के श्रधीन श्रीद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिद्धित विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित मामले श्रीमक श्रीमक प्रधान न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री करण सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, सो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./287-83/63827.—चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मैं. ग्रोसवाल इन्जीनियरिंग एण्ड जनरल वर्कस, 48 एन.ग्राई.टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री नरेन्द्र मोहन तथा उसके प्रवन्धकों के माध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिण्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीबोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा स्वतः ग्रिधिनियम के धारा त्या के छीन ग्रीटिनियक श्रिधिकरण, हरियाणा फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विधादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रदन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री नरेन्द्र मोहन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो.वि./जी.जी.एन./132-83/63835.- - चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० चन्द्र नगर कैमीकरज एण्ड मिनरल प्रा० कि.० चन्द्र नगर, गुड़गांका,के श्रमिक श्री शम्भु नाथ तथा उसके प्रवन्द्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करता वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415—3—श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहले हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम—57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शम्भू ताथ की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.बि./भिवानी/198-83/63842.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मोडल एक्सोटिक एनिमल फार्म, भिवानी (ii) हरियाणा डेरी ि परीट कोपरेटिव फैडरेशन लि० चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री वारसी दास सवा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यू।यनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री बनारसी दास की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि /रोहतक/223-83/63849.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इन्टरनैशलन पाईप वर्कस दिल्ली रोहतक रोड, जाखोदा (बहाबुरगढ़) के श्रमिक श्री ईस राज विशवमा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रब, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रद. की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 9641··1-श्र म-70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी भ्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.स्रो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक, 8-5-70 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम-न्यायलय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संवन्धित मामला है:—

क्या श्री हंस राज विशकर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. म्रो.वि/रोहतक/222-83/63856.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मैं ० हिन्दुस्तान पोटरीज इन्डस्ट्रीज वहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री भगवान सिंह तया उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक' 6 नवम्बर, 1970 के साथ पिठत सरकारी अधिसूचना सं 3864-ए. एस. श्रो. (ई)-श्रम-70/13648, 'दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विधादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामलां न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तौ विधादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री भगवान सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./ग्रम्बाला/8 3-83/63863.—-चूंकि हॅरियाणा के राष्ठ्यपाल की राय है कि मैं. निर्देशक पश्मि हैस्य कसर्थिस हरियाणा चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री बारू राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद/लिखित मामले में कोई भीखोगिक विवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाले विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीद्यागिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का श्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिशसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत श्रिधिनियम की घारा 7 के श्रयीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :---

क्यां श्री बारू राम की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि महीं, सो वह किस राहत का हकदार है ?